

## Содержание

|                |   |
|----------------|---|
| Об авторе..... | 3 |
|----------------|---|

## ФИЛОСОФИЯ

|                                                        |    |
|--------------------------------------------------------|----|
| Философема.....                                        | 5  |
| Не железною волей, а созвучьем души .....              | 7  |
| Частушка о философах .....                             | 7  |
| Законы диалектики («собачий вальс»).....               | 9  |
| Создам я корзину заумных логик.....                    | 10 |
| О философии .....                                      | 10 |
| Науки индульгенции.....                                | 11 |
| Раз-сужденье, два-сужденье.....                        | 11 |
| Убежденье – убежать – убежище... ..                    | 12 |
| Дружить с художником – не худо .....                   | 13 |
| Феноменология света и цвета .....                      | 13 |
| Кривая Гаусса.....                                     | 14 |
| Мета-фора и мета-морфоз .....                          | 15 |
| В этом мире безобразном .....                          | 16 |
| Своим волшебным рыжим оком .....                       | 17 |
| О бездна наших дней! .....                             | 17 |
| Высокая степень безумья .....                          | 18 |
| Законом закован, повязан речами.....                   | 18 |
| Люди, знайте, что мудрец .....                         | 18 |
| Взрослые – всего лишь старые дети .....                | 19 |
| Пришла пора мне изнемочь .....                         | 19 |
| Моё смирение – детище гордыни .....                    | 19 |
| Проза жизни, смерть желаний .....                      | 19 |
| Пошлость, скука .....                                  | 20 |
| Мы пьём, чтоб не упасть .....                          | 20 |
| Лень .....                                             | 20 |
| Вновь день ушёл .....                                  | 21 |
| Грязной раздавленной кашей снег на асфальте лежит..... | 21 |
| Рай полированный .....                                 | 22 |

|                                                                    |    |
|--------------------------------------------------------------------|----|
| В вопросах-торосах.....                                            | 22 |
| Сплетни.....                                                       | 22 |
| Дураки.....                                                        | 23 |
| Огненной магмой прагматизма.....                                   | 24 |
| Феноменология слова «Нет».....                                     | 25 |
| А. Вознесенскому.....                                              | 26 |
| В основе культуры – культ Ра.....                                  | 27 |
| Борись с культурой – воспареньем.....                              | 27 |
| Мне культуры меч Дамоклов.....                                     | 28 |
| Хамство.....                                                       | 28 |
| А туристы, как верблюды.....                                       | 28 |
| Варварство, культура и природа.....                                | 29 |
| ...И кремнем искру высекал кроманьонец.....                        | 30 |
| Облики человека.....                                               | 30 |
| Cogito ergo suum.....                                              | 31 |
| Вариант, близкий к верлибру.....                                   | 32 |
| Плотность тела, телесность плоти.....                              | 33 |
| Чушь, конечно, но забавно.....                                     | 33 |
| Ограниче мысли кристаллом.....                                     | 35 |
| Рубаи (подражание О. Хайяму).....                                  | 35 |
| 1. Сущность жизни постичь я, как видно, не смог.....               | 35 |
| 2. Смысла жизни повсюду на свете ищу.....                          | 35 |
| 3. Естествознание, природа вещей – унылое мрачное<br>кладбище..... | 36 |
| 4. Всех людей дураками считает глупец.....                         | 36 |
| 5. Я в сомненье глубоком к небу руки воздел.....                   | 36 |
| 6. Пусть пожаром пылают любопытства пороки.....                    | 36 |
| Сиянье в духе и в душе.....                                        | 36 |
| Выбор.....                                                         | 37 |
| Сомнение.....                                                      | 37 |
| Доблесть ослов – упрямство!.....                                   | 38 |
| Шапочное.....                                                      | 39 |
| Долг или Любовь?.....                                              | 41 |
| Жестокий, вязкий «подковёрный бой».....                            | 41 |
| Чушь.....                                                          | 42 |

|                                                     |    |
|-----------------------------------------------------|----|
| Извлечём мы истины из тины.....                     | 42 |
| Источник истины – в душе.....                       | 42 |
| О Контексте.....                                    | 43 |
| «Формула любви».....                                | 43 |
| Даже двух людей общенье.....                        | 44 |
| Тайное тождество грядок и строк.....                | 44 |
| Зарисовка.....                                      | 45 |
| Множественная параномазия.....                      | 45 |
| Непостижима связь времён.....                       | 46 |
| Одно из первых «виршесмыслов».....                  | 46 |
| Аграрно-восторженное.....                           | 47 |
| Феноменология улыбки.....                           | 47 |
| Я не согласен с тем, что наступает осень.....       | 48 |
| Но кто я людям всем?.....                           | 48 |
| ОСуществляет существо.....                          | 48 |
| Стихийное сумасшествие.....                         | 49 |
| (После магико-эстетической революции мая 1998)..... | 49 |
| Пустяк. Пустыня. Пустота.....                       | 50 |
| Увидеть в пустоте – основы Бытия.....               | 50 |
| Чело-век.....                                       | 50 |
| Я – и мастер, и глыба гранита.....                  | 50 |
| Образование.....                                    | 51 |
| Мужчина.....                                        | 51 |
| Старинная мифологема Дракона.....                   | 52 |
| 1. Я прыгну в небо, изрыгнув огонь.....             | 52 |
| 2. Я – древний, мудрый и могучий. Я – дракон.....   | 53 |
| 3. Антиномии – два могучих крыла.....               | 53 |
| 4. Разгадка идеи Дракона.....                       | 54 |
| Наш летальный исход.....                            | 54 |
| Старого пруда зеркало.....                          | 54 |
| Погрыз в быту.....                                  | 55 |
| Заблудились трамваи в тумане.....                   | 55 |
| Счастья нет. Нет страданий и зла.....               | 55 |
| Бог работой дарует время.....                       | 56 |

## МИФОЛОГИЯ И РЕЛИГИЯ

|                                                                                                |    |
|------------------------------------------------------------------------------------------------|----|
| Пора пророчить .....                                                                           | 56 |
| Хари отнюдь надевать нельзя! .....                                                             | 57 |
| Язычество .....                                                                                | 57 |
| Хронос .....                                                                                   | 58 |
| Мифологема цивилизации и культуры .....                                                        | 58 |
| Коллеге (подражание Гомеру) .....                                                              | 59 |
| ...Лучезарный лик Аполлона .....                                                               | 59 |
| Но даже мифическая скотина .....                                                               | 60 |
| Тёмные страсти Синайской пустыни .....                                                         | 60 |
| Нечто богохульное? Или грех гордыни .....                                                      | 61 |
| Мы Христу приготовили крест .....                                                              | 61 |
| Молитва .....                                                                                  | 62 |
| Времён библейских благодать .....                                                              | 62 |
| «Сущность христианства» по Фейербаху...<br>(опять культура богоборчества и богохульства) ..... | 63 |
| Недосказанность прекрасна .....                                                                | 64 |
| Понтификатор был Христос .....                                                                 | 64 |
| Ткёт сети ловчие судьба .....                                                                  | 64 |
| Куда ведёт Аскезы путь? .....                                                                  | 65 |
| Огрехи о грехе .....                                                                           | 65 |
| Парономазия .....                                                                              | 66 |
| Сотворение .....                                                                               | 66 |

## СЛОВО. ЯЗЫК. ПОЭЗИЯ

|                                        |    |
|----------------------------------------|----|
| Для кого — поэзия .....                | 68 |
| Поэзия .....                           | 68 |
| Тайна славы — слово .....              | 69 |
| Мы забыли, что слово есть символ ..... | 70 |
| Меня стихи сведут с ума .....          | 70 |
| Меня рефлексия загрызла .....          | 70 |
| Похвала — пахлава... ..                | 70 |
| Слова, словно дохлые мухи .....        | 71 |

|                                            |    |
|--------------------------------------------|----|
| Заёмные мысли, чужие слова .....           | 71 |
| Мне кажется — бездушная машина языка ..... | 71 |
| Меня влечёт волшебный лес .....            | 72 |
| Стихия стихов — за собой потащила .....    | 72 |
| Писать стихи — очень легко .....           | 72 |
| О поэзии .....                             | 73 |
| ...Я рву бумаги, крушу карандаши .....     | 73 |
| Опусы и ляпусы .....                       | 73 |
| И в языке услышу я .....                   | 74 |
| Постичь Поэзию поэту не дано .....         | 74 |
| Стихо-творение — стихии творение?.. ..     | 75 |
| Язык .....                                 | 76 |

## ИСТОРИЯ И СОВРЕМЕННОСТЬ

|                                                                                                                       |    |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----|
| К проблеме реминесценции, рефлексии и тождества<br>потоков сознания и истории (взгляд на исторические<br>эпохи) ..... | 78 |
| Эпохи истории России .....                                                                                            | 80 |
| 1. XVII в.<br>Степан Разин (отрывки из неоконченной<br>поэмы) .....                                                   | 80 |
| 2. XVII - XVIII в.<br>Будет всё впереди .....                                                                         | 86 |
| 3. Нач. XX в.<br>Время было переломное .....                                                                          | 87 |
| В чёрных «Волгах» — вороньё .....                                                                                     | 88 |
| Совместно варимые в котле коммунизации .....                                                                          | 88 |
| Анти-Интернационал (пролетарский рок) .....                                                                           | 88 |
| 4. 1941 — 1945.<br>Горькое лето .....                                                                                 | 90 |
| 5. 1980-е<br>В казённых домах .....                                                                                   | 91 |
| Партийное собрание .....                                                                                              | 91 |
| Вместо созидания .....                                                                                                | 92 |

|                                         |     |
|-----------------------------------------|-----|
| Как у нас в республике .....            | 92  |
| Застой .....                            | 93  |
| О марксизме-ленинизме .....             | 94  |
| Души драгоценная чаша... ..             | 95  |
| Не «в белом венчике из роз».....        | 96  |
| 6. Россия, 1990-е .....                 |     |
| Поголовно уголовники .....              | 96  |
| Закончилась эпоха слов .....            | 97  |
| Пролетарии всех стран, разбейтесь ..... | 98  |
| На кой нам чёрт такая власть .....      | 99  |
| «Не верь, не бойся, не проси».....      | 99  |
| Россия, 90-е .....                      | 99  |
| Россия .....                            | 100 |
| И тем не менее .....                    | 101 |
| Города и сёла .....                     | 101 |
| Москва .....                            | 102 |
| Москва. Зарисовка. 1991 .....           | 102 |
| 7. Мир в целом .....                    |     |
| Англия .....                            | 103 |
| По Г.Х.Андерсену .....                  | 105 |
| В эпоху крушения империй.....           | 105 |
| К Храму ли наша дорога?.....            | 105 |
| Мы помним: «Азъ Воздам».....            | 106 |
| Мы объелись культурой .....             | 106 |

#### САМОПОЗНАНИЕ СУБЪЕКТА

(размышления, рефлексия, самоирония...)

|                                         |     |
|-----------------------------------------|-----|
| Одобренья не жду... ..                  | 107 |
| Как тайная игла Кашеева.....            | 107 |
| Трудно быть самим собой .....           | 107 |
| Я сонными мозгами .....                 | 108 |
| О себе со стороны (автоэпиграмма) ..... | 108 |
| Бунт «интеллигента» .....               | 109 |
| Бред буйного сумасшедшего .....         | 110 |

#### Мини-вирши

|                                                                             |     |
|-----------------------------------------------------------------------------|-----|
| Моё кепи – набекрень .....                                                  | 110 |
| У меня в светёлке – гуляют сквозняки .....                                  | 111 |
| Познав основы всех основ.....                                               | 111 |
| Критический автопортрет .....                                               | 111 |
| Автопортрет.....                                                            | 111 |
| Я славянин. Я раб своей души .....                                          | 113 |
| Я старый, мудрый и печальный зверь.....                                     | 113 |
| «В этом зеркале нет моего лица...» (само-отравление<br>само-цитатами) ..... | 113 |
| В семье .....                                                               | 114 |
| Я знаю: я для всех – дурак .....                                            | 114 |
| Игры со словом соблазнительны.....                                          | 115 |

#### ЛИРИКА

|                                                                              |     |
|------------------------------------------------------------------------------|-----|
| Часто вижу: Волга и над ней – Венец .....                                    | 115 |
| Волга, Солнцем осиянная.....                                                 | 116 |
| Лесная терапия .....                                                         | 116 |
| Встреча на вокзале .....                                                     | 117 |
| Я в весну не вползаю – вбегаю .....                                          | 118 |
| В поезде «Москва – Ульяновск» .....                                          | 118 |
| Брожу как пьяный в городе родном .....                                       | 119 |
| Ускользающе-печально .....                                                   | 119 |
| Сентиментально .....                                                         | 120 |
| Дрожащий свет двух наших свечек.....                                         | 120 |
| Унылое понятие «серьёзность» .....                                           | 120 |
| Самолюбие своё не жили .....                                                 | 121 |
| Антропосоциогенез (отрывок из колыбельной<br>для новорожденной дочери) ..... | 121 |
| Над светлой речкой Серебрянкой .....                                         | 122 |
| Парус белый.....                                                             | 122 |
| Бег трусцой .....                                                            | 123 |
| Моя душа – одинокий озябший котёнок .....                                    | 124 |

|                                                                                               |     |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------|-----|
| Полубелый стишок – полубелиберда (внутренний диалог во время экзистенциального кризиса) ..... | 124 |
| Напрасно я сошёл с ума.....                                                                   | 126 |
| Благодарность сквозь печаль .....                                                             | 126 |
| Декабрь                                                                                       |     |
| 1. Депрессия.....                                                                             | 127 |
| 2. Солнце по крышам крадётся, как кот .....                                                   | 128 |
| Credo ad absurdus .....                                                                       | 128 |
| Чёрный ворон – мизантроп .....                                                                | 129 |
| Опять о птичках .....                                                                         | 129 |
| Ещё из «Книги Джунглей».....                                                                  | 129 |
| Коллеге, в день рождения .....                                                                | 130 |
| Красная бандана как средство от головной боли.....                                            | 131 |
| Ура, ура – наступает день рожденья! .....                                                     | 131 |
| Я повторил свой глупый подвиг.....                                                            | 131 |
| N.N. ....                                                                                     | 132 |
| И на земле подзолистой.....                                                                   | 132 |
| Запрягу я химеру в телегу .....                                                               | 132 |
| Нищий .....                                                                                   | 132 |
| Бронзовый отсвет сосновой коры.....                                                           | 133 |
| Осень .....                                                                                   | 133 |
| Мне на волжском .....                                                                         | 133 |
| Ярое солнце. Сугробы просели .....                                                            | 134 |

## О СТАРОМ ДОМЕ

(Построен в 1870)

|                                                 |     |
|-------------------------------------------------|-----|
| Нужно жить среди стихий.....                    | 134 |
| Зарисовка. Жизнь в Симбирске – Бебеля, 33 ..... | 134 |
| Нет быта у меня – сплошное Бытие .....          | 135 |
| Мой дом – словно маленький космос .....         | 136 |
| Сентиментальный вальс .....                     | 136 |
| Жаль тополя. – Но!.....                         | 137 |
| Буддийские мотивы .....                         | 138 |